।। अर्हम् ।।
आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)-331803
दूरभाश : 01565, 224900, 224600
ई-मेल : jstsdgh01565@gmail.com

भगवान पा-र्व का व्यक्तित्व :ाब्दातीत है - आचार्य महाप्रज्ञ

श्रीडूँगरगढ़ 28 दिसम्बर :- आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कल्याण मंदिर स्त्रोत की व्याख्या करते हुए फरमाया - आचार्य सिद्धसेन भगवान पा-र्व की स्तुति कर रहे है। स्तुति करते करते एक प्र-न उठा - विचित्र बात है कि लोग आपको ह्रदय में स्थापित करके तर जाते हैं। आपमें तो गुरूत्व है, हजार हाथी भी आपका भार नहीं उठा सकते । आपको ह्रदय में बिठाकर संसार सागर से तर जाते हैं।

इन प्र-नों का समाधन बाहर से नहीं भीतर से प्राप्त होता है। :ाब्दों में समाधान कम होते है। :ाब्दातीत में समाधान बहुत जल्दी मिलते हैं। महान् व्यक्ति का प्रभाव अचिंत्य होता है। प्रामाणिकता में बहुत बल होता है। स्तुतिकार को समाधान मिल गया कि आपका प्रभाव अचिंत्य है और :ाब्दातीत है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि लेखक, कवि एवं साहित्यकार केवल :ाब्दों का जाल न बिछाएं। उनके प्रत्येक :ाब्द में रहस्या समाया हुआ होना चाहिए। रहस्योद्घाटन करने वाला चिंतन महत्पूर्ण होता है।

अभ्यास और वैराग्य के द्वारा मन का निग्रह संभव - युवाचार्य महाश्रमण

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि हमारे जीवन का अभिन्न अंग है मन। मन के द्वारा हम स्मृति, विचार और कल्पना करते हैं। आयरो में कहा गया - यह मानव अनेक चितो वाला होता है। श्रीमद् भागवत् गीता के छटे अध्याय में अर्जुन व श्रीश्ण का संवाद मिलता है। अर्जुन कहते हैं- यह मन बड़ा चंचल है, हठी है, बलवान है इसका निग्रह करना हवा को रोकने के समान है। श्रीश्ण समाधान देते है-अभ्यास और वैराग्य के द्वारा मन को काबू में किया जा सकता है।

पांतजल योग में भी यही बात कही गई है उत्तराध्ययन सूत्र में के-ी श्रमण व गणधर गौतम का वार्तालाप है- के-ी कहते है कि मन दुश्ट अ-व की तरह है - गौतम समाधान प्रस्तुत करते है कि श्रुत र-मि -ज्ञान की लगाम से मैनें मन को नियंत्रित कर रखा है। श्रुत की आराधना करने वाले, स्वाध्याय करने वाले, मनन करने वाले लगाम अपने हाथ में ले लेते है।

गीता और उत्तराध्ययन में समस्या का समाधान प्रस्तुत किया गया है।

ज्ञानी व्यक्ति समाधान दे सकता है, हमारा ज्ञान इतना निर्मल बने कि हम समस्या का समाध ान दे सके। युवाचार्यवर ने मोह को मन की चंचलता का सर्जक है बताया। उन्होनें कहा कि जीवन निर्माण के सूत्र किसी भी ग्रंथ,पंथ या संत से मिले उन्हे ग्रहण करना चाहिए।

कार्यक्रम में नाथद्वारा चातुर्मास सम्पन्न कर गुरू द-ान करने वाले मुनि कुलदीप के सहगामी मुनि मुकुल कुमार एवं कांकरोली चातुर्मास करने वाली साध्वी सोमलता आदि साध्वियों ने अपने श्रद्धाभाव प्रस्तुत किये। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।